International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 September – October 2022

'परमाणु: द स्टोरी ऑफ पोखरण' फिल्म में राष्ट्रीय भावना

प्रो. डॉ. जी.एस. भोसले
हिंदी विभागाध्यक्ष, सावित्रीबाई फुले महिला महाविद्यालय, सातारा
Corresponding Author - प्रो. डॉ. जी.एस. भोसले
Email - gajanan2767@gmail.com
DOI - 10.5281/zenodo.7314928

शोधसार:

सन 1998 में राजस्थान के पोखरण में सफल परमाणु परिक्षण करके भारत ने दुनिया में शक्तिशाली होने का संदेश दिया था | इस घटना से हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो गया था | देश का आत्मसम्मान बढ़ गया था | इसी घटना को आधार बनाकर निर्देशक आभिषेक शर्मा ने इस फिल्म का निर्माण किया | 31 mamई 2017 को इस फिल्म का फिल्मीकरण आरंभ हुआ था और 25 मई 2018 को सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुई | फिल्म को केवल वास्तव रूप में प्रदर्शित करके डाक्यूमेंटरी बनाने के बदले कुछ काल्पनिक घटनाओं को जोड़कर फिल्म स्टोरी में परिवर्तित किया है | निर्माता का यह प्रयास सराहनीय रहा है | हर भारतीय के मन में आत्मसम्मान जगाने और उन्हें राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत करने में निर्माता सफल रहा है |

बीज शब्द : *परमाणु परिक्षण, यूएस सैटेलाईट , इंडियन साइंटिस्ट, न्यूक्लियर पावर, अमेरिकी खुफिया एजेंसियां, इंडियन साइंटिस्ट, देश प्रेम |*

उद्देश्य :

1. 'परमाणु: द स्टोरी ऑफ पोखरण' फिल्म में चित्रित राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालना |
2. फिल्म का आधार बनी सत्य घटना और काल्पनिक घटना के तालमेल का विवेचन करना |
3. भारतीय सैनिकों और वैज्ञानिकों द्वारा मातृभूमि के लिए किए जानेवाले असीम त्याग एवं समर्पण के महत्व का मूल्य विषद करना |

शोध विस्तार:

मनोरंजन सिनेमा का प्रमुख उद्देश्य होता है | लेकिन इसके साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक, प्राकृतिक समस्याओं तथा राष्ट्र प्रेम से जुडी घटनाओं को आधार बनाकर समाज मन जागृत करने का एवं मातृभूमि के प्रति त्याग की भावना वृद्धिंगत करने का सफल प्रयास हिंदी सिनेमा में निरंतर होता रहा है | 'परमाणु : द स्टोरी ऑफ़ पोखरण' में वैज्ञानिकों, इंजीनियर्स और सेना के अधिकारियों की मातृभूमि के प्रति त्याग और समर्पण की भावना का चित्रण किया है |

सिनेमा का विषय सत्य घटना पर आधारित है | इसमें चित्रित राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत कहानी हर भारतीय के हृदय में गर्व की भावना पैदा करती है | निम्न मुद्दों के माध्यम से इसे स्पष्ट कर सकते हैं :

राष्ट्र को शक्तिशाली बनानेवाली सत्य घटना से संबंधित कहानी :

'परमाणु : द स्टोरी ऑफ़ पोखरण' सिनेमा की कथावस्तु भारत की परमाणु परीक्षण की घटना पर आधारित है | 11 मई, 1998 में भारत ने पोखरण में ऑपरेशन शक्ति के तहत सफल परमाणु परीक्षण किया था | उसके बाद 13 मई को न्यूक्लियर टेस्ट किए गए | इन परीक्षणों का नेतृत्व पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने किया था | ये परीक्षण करने का मुख्य उद्देश्य विश्व को यह बता देना था कि पड़ोसी देशों की सामरिक योग्यता का मुँह तोड उत्तर देने के लिए हम समर्थ हैं। साथ ही अपनी सुरक्षा और बचाव करने के लिए हम आत्मनिर्भर हो सके।

"भारत जब पोखरण में ऑपरेशन शक्ति के तहत सफल परमाणु परीक्षण करने की तैयारी कर रहा था, तो इसकी भनक किसी भी दूसरे देश को नहीं थी | यहां तक कि परमाणु परीक्षण होने के बाद भी इसकी जानकारी किसी को नहीं लगी थी | भारत सरकार के लिए उस वक्त ये बहुत चुनौतीपूर्ण काम था क्योंकि अमरिका की खुफिया एजेंसी सीआईए (CIA) भारत की हरकतों पर पल-पल नजर बनाए रखती थी | सीआईए ने भारत पर नजर रखने के लिए अरबों खर्च कर 4 सैटेलाइट लगाए थे | कहा जाता है कि ये सैटेलाइट इमेज और वीडियो कैपचरिंग में बहुत अच्छे थे | ये जमीन पर पड़ी छोटी-सी-छोटी चीज देख लेते थे लेकिन फिर भी भारत के वैज्ञिनकों ने इस मिशन को सफलता से पूरा किया |" [1]

"डायरेक्टर अभिषेक शर्मा ने परमाणु परीक्षण की स्टोरी को बिना किसी थ्रिलर के साथ पेश किया है। सबसे अच्छी बात यह है कि दुनिया की नजरों से अबतक छुपी इस कहानी को उन्होंने एक अलग अंदाज में पेश किया है। अभिषेक ने साईवेन क्यूड्रास और सयुंक्ता चावला शेख के साथ फिल्म की स्क्रिप्ट लिखी है।

अभिषेक ने फिल्म में रियल फुटेज का भी यूज किया है, जिसमें नेताओं- अटल बिहारी वाजपेयी और एपीजे अब्दुल कलाम- के भाषण शामिल हैं। बता दें कि ये बॉलीवुड की पहली ऐसी फिल्म है, जिसमें यूएस की जबरजस्त टांग खींची गई है।" [2] इस परीक्षण के वक्त पोखरण के आस-पास के मकानों का काफी नुकसान हुआ था | लेकिन भारतीय जनता के मन में परमाणु परीक्षण की सफलता का इतना आनंद था कि, उसके समक्ष लोगों को इस नुकसान का दुख महसूस नहीं हुआ |

रोचकता एवं समर्पण की निर्मिति के लिए काल्पनिक कथा की योजना :

लेखक ने फिल्म को डाक्यूमेंटरी बनने से बचाने के लिए काल्पनिक पात्र सफलतापूर्वक जोड़े हैं | अश्वत रैना के पारिवारिक जीवन की घटनाओं का चित्रण करके संघर्ष की निर्मिति की है | नायक मातृभूमि की सेवा के लिए परिवार तक को दांव पर लगाने को तैयार हो जाता है | परमाणु परीक्षण की गोपनीयता बनाए रखने के

लिए अश्वत अपनी अपनी पत्नी से भी झूठ बोलता है| लेकिन पाकिस्तानी और अमरिकी जासूस पोखरण की जानकारी हासिल करने के लिए सुषमा तक अश्वत के पोखरण में होने की बात पहुंचा देते हैं| ताकि दोनों के बीच फोन पर होनेवाली बातें चुपके से सुनकर योजना का पता लगाए| अश्वत और सुषमा के बीच टकराव भी पैदा होता है | अंबालिका उर्फ नकुल (डायना पेंटी) और अश्वत को एक कमरे में देख सुषमा झगड़कर अपने घर निकल जाती है | परिवार टूटने की नौबत आ जाती है | सुषमा कहती है "मैंने क्या नहीं किया तुम्हारे लिए..... डोंट टच मी .....कब से चल रहा है यह ..... डोंट फालो मी"[3] फिर भी अश्वत उसकी चिंता किए बिना गोपनीयता को बनाए रखता है। दर्शक यहाँ भावुक हो जाते हैं | अश्वत का मातृभूमि के लिए किया गया त्याग एवं समर्पण दर्शकों को देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत कर देता है |

कश्मीर पर हमले की योजना बनाकर अमरिकी ख़ुफ़िया एजेंसी को गुमराह बनाने की होनहार योजना :

भारत की प्रधानमंत्री इंदिराजी गांधी के शासन काल में (1974 में) जब भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया था तो उसके बाद अमरिका की ओर से कई आर्थिक और राजनीतिक पाबंदियाँ हम पर लगाई गई थी| "इस दौरान सोवियत संघ के विघटन के बाद हमें किसी भी बड़े देश का साथ नहीं मिला। पाकिस्तान के साथ चीन और कई मायने में अमरिका भारत की सुरक्षा को लेकर चिंता का विषय बनता जा रहा था। साथ ही साथ हम फिर से परमाणु परीक्षण ना कर पाये इसके लिए लगातार गुप्तचर व्यवस्थाओं का सहारा लिया जा रहा था। साथ ही अमेरिकी सैटेलाइट पोखरण रेंज पर लगातार आसमान से नज़र रखे हुए थे। ऐसे में भारत के लिए परमाणु परीक्षण करना असंभव सा था और सुरक्षा के मद्देनजर परमाणु परीक्षण करना जरूरी भी था!" [4] भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी ने कहा कि, भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने 1995 में परमाणु परीक्षण करने का फैसला किया। लेकिन अमेरिकी सैटलाइटों को पोखरण में परमाणु परीक्षण की तैयारी के संकेत मिलने के बाद योजनाओं को रोक दिया गया। तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने तैयारी रोकने के लिए राव पर दबाव बनाया।

सन 1998 में परमाणु परीक्षण को अंज़ाम देने के लिए बहुत सारी विपरीत स्थितियों में पूरी दुनिया की निगाह रखती सैटेलाइट से नज़र बचाकर परमाणु परीक्षण करना था | लेकिन अमरिका और पकिस्तान की ख़ुफ़िया एजन्सी के हाथ इसकी कुछ जानकारी प्राप्त हुई थी | अतः अमरीका का ध्यान भटकाने के लिए अश्वत रैना हिमांशु शुक्ला की मदद से एक योजना बनाता है कि कश्मीर में पकिस्तान के खिलाफ युद्ध का माहौल पैदा करे | उनकी यह योजना सफल भी होती है, अमेरिकी सैटेलाईट कश्मीर पर केंद्रित हो जाते हैं | और उनकी नाक के नीचे अश्वत की टीम सफल परमाणु परीक्षण करके हिन्दुस्थानी जनता का सर गर्व से ऊँचा कर देती है | दुनिया में भारत एक शक्ति के रूप में उभरकर आता है |

तत्परता और अपार संघर्ष का सामना करनेवाली अश्वत की टीम :

केंद्र की सरकार अस्थिर होने के डर से जब हिमांशु शुक्ला पोखरण योजना बंद करनी पड़ेगी कहते हैं, तो अश्वत जिद करके चालू रखते हैं | उसे सिर्फ 10 दिनों की अवधि में परीक्षण करने के लिए कहा जाता है | वास्तव में उस काम के लिए 15 दिनों से भी अधिक अवधि की जरुरत थी | लेकिन फिर भी अश्वत चैलेंज स्वीकार करता है और दिन-रात काम करके योजना सफल बनता है| आय एस आय के एजंट द्वारा होनेवाला हमला हो या अचानक सैटेलाईट आने की खबर मिलने पर केवल 15 मिनट में अश्वत की टीम द्वारा परीक्षण की जगह को पूर्ववत करना हो; हर कठिन से कठिन काम अश्वत की टीम तत्परता से पूरा करती है | सब को सभी प्रकार का अपार संघर्ष झेलना पड़ता है |

वीरता और देशप्रेम की भावना भरनेवाले गीतों की योजना :

'परमाणु : द स्टोरी ऑफ़ पोखरण' सिनेमा के केंद्र में राष्ट्र निष्ठा एवं राष्ट्र प्रेम की भावना है | अतः यह भावना दिव्य कुमार के 'थारे वास्ते' गीत में प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त हुई है |

"जोश में जला ज़लज़ला चला
अब रुकेंगे ना हम
डर मिटा चला सर उठा चला
अब झुकेंगे ना हम ना हम

हो हो हो हो हो

जोश में जला ज़लज़ला चला
अब रुकेंगे ना हम
डर मिटा चला सर उठा चला
अब झुकेंगे ना हम
ओ थारे वास्ते रे माडी रे
जान लगा देंगे हम
थारे वास्ते रे माडी रे
दुनिया हिला देंगे हम (ओओओओ)
जोश में जला ज़लज़ला चला
अब रुकेंगे ना हम
डर मिटा चला सर उठा चला
अब झुकेंगे ना हम
जोश में जला ज़लज़ला चला
अब रुकेंगे ना हम
डर मिटा चला सर उठा चला
अब झुकेंगे ना हम

ओह इक प्यास आधी थी
इक आस प्यासी थी
इक क़र्ज़ दिल पे था रखा (इक क़र्ज़ दिल पे था रखा)
पूरा हुआ अपना टूटा सा वो सपना
चुभता जो आँखों में आया था (चुभता जो आँखों में आया था)

ओ थारे वास्ते रे माडी रे
जान लगा देंगे हम
थारे वास्ते रे माडी रे
दुनिया हिला देंगे हम (ओओओओ)
जोश में जला ज़लज़ला चला
अब रुकेंगे ना हम
डर मिटा चला सर उठा चला
अब झुकेंगे ना हम
जोश में जला ज़लज़ला चला
अब रुकेंगे ना हम
डर मिटा चला सर उठा चला
अब झुकेंगे ना हम" [5]

स्पष्ट है कि यहाँ गीतकार ने भारतियों के मन में जोश और समर्पण का भाव भरने की

सफल कोशिश की है | अमरिका जैसा प्रतिद्वंद्वी सामने होकर भी निडर होकर दुनिया हिलाने की बात की है | हर भारतीय का सीना इसे सुन गर्व से भर जाता है |

उपसंहार :

पूरी दुनिया में देश का सर गर्व से ऊँचा करने वाली और देश को शक्तिशाली बनाने वाली पोखरण की परमाणु परीक्षण की घटना को आधार बनाकर 'परमाणु : द स्टोरी ऑफ़ पोखरण' फिल्म का निर्माण किया गया है | तमाम भारतीयों के हृदय में राष्ट्रीय भावना जागृत करना इस फिल्म का मूल हेतु रहा है | साथ ही इस सफलता के लिए अष्टोप्रहर कष्ट, संघर्ष तथा सर्वस्व समर्पण करनेवाले सैनिकों और वैज्ञानिकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना भी फिल्म निर्मिति का उद्देश्य रहा है | इस दृष्टि से निर्माता पूर्णतः सफल रहा है |

सन्दर्भ सूची :

1. ABP News - Hindi News : https://www|abplive|com/states/rajasthan/pokhran-rajasthan-india (25/09/2022)
2. दैनिक भास्कर : https://www|bhaskar|com/news/movie-review-parmanu-the-story-of-pokhran-5880371|html; (25/09/2022)
3. परमाणु : द स्टोरी ऑफ़ पोखरण फिल्म का दृश्य (आरंभ से 1.20 घंटे बाद, Netflix पर; 28/09/2022)
4. **Hirendra J,** Publish Date: Fri, 25 May 2018 09:10 AM (IST) : दैनिक जागरण https://www.jagran.com/entertainment/reviews-parmanu-the-story-of-pokhran-movie-review-star-cast-john-abraham-and-diana-penty-directed-by-abhishek-sharma-17997076.html (28/09/2022)
5. https://www.google.co.in/search?q (30/09/2022)